अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान वर्ष : 2018 **दिनांक : 21-12-2018**

समय : 3 घंटा **छठा वर्ष-द्वितीय प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

पच्चीस बोल, तत्त्व चर्चा, पच्चीस बोल की चर्चा, पच्चीस बोल की चतुर्भंगी

प्र. 1 पच्चीस बोलकिन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में लिखें 5

(क) संवर तत्त्वबारहवां संवर।

(ख) उन्नीसवां दण्डक।

(ग) रसनेन्द्रिय का तीसरा विषय।

(घ) गोत्र कर्म किस गुणस्थान में क्षीण होता है?

(ङ) पांचवां गुणस्थान किसमें पाया जाता है?

(च) आहारक काय योग किस गति के जीवों के होता है?

(छ) एकेन्द्रिय जीवों की कौन सी पर्याप्ति अंत में पूर्ण होती है?

प्र. 2 तत्त्व चर्चाकिन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें 5

(क) साधु तपस्या करे वह व्रत में या अव्रत में?

(ख) एकेन्द्रिय सूक्ष्म या बादर?

(ग) धर्म और धर्मास्ति एक या दो?

(घ) दया छह में कौन? नौ में कौन?

(ङ) काल छह में कौन? नौ में कौन?

(च) छह द्रव्य में सावद्य कितने? निरवद्य कितने?

(छ) निरवद्य हेय या उपादेय?

प्र. 3 पच्चीस बोल की चर्चाकिन्हीं तीन प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखेंकिसमें व कौन से? 6

(क) जीव के नौ भेद

(ख) ग्यारह गुणस्थान

(ग) सतरह दण्डक

(घ) दस योग

(ङ) पांच लेश्या

प्र. 4 चतुर्भंगीकिन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर एक दो लाईन में दें 4

(क) आत्मा किस कर्म का उदय?

(ख) किस भेद में जीव कम, किस भेद में जीव अधिक?

(ग) तुम्हारे में चारित्र कौन सा?

(घ) कौन सा द्रव्य कम, कौन सा द्रव्य अधिक?

(ङ) ध्यान किस कर्म का उदय?

(च) किस संवर के जीव कम, किस संवर के जीव अधिक?

प्रतिक्रमण, जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड) कर्म प्रकृति20

प्र. 5 जैन तत्त्व प्रवेशकिन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें 9

(क) दृष्टांत द्वारपुण्य-पाप को विवेचित कीजिए।

(ख) परमात्म द्वार

(ग) ज्ञानावरणीय कर्म बंध के कारणों का वर्णन करें।

(घ) पारिणामिक भाव को परिभाषित करते हुए जीवाश्रित और अजीवाश्रित पारिणामिक भेदों के नाम लिखें।

प्र. 6 प्रतिक्रमणनिम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें 5

(क) वंदना सूत्र अथवा शक्र स्तुति।

प्र. 7 कर्म प्रकृतिकिन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें 6

(क) वेदनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें।

(ख) आयुष्य कर्म बंध के हेतु लिखें।

(ग) कर्म के विपाकोदय में कार्यकारी निमित्त के विषय में लिखें।

बावन बोल, इक्कीस द्वार, जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खंड)20

प्र. 8 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें 6

(क) उदय के तैतीस बोलों में कौन-कौन आत्मा?

(ख) संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा?

(ग) दया हिंसा कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(घ) आठ आत्मा कितने भाव? कितनी आत्मा?

(ङ) अजीव के चौदह भेद ऊँचे, नीचे, तिरछे लोक में कितने-कितने?

प्र. 9 इक्कीस द्वारकिन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें 6

(क) अनाहारक जीवों के भेद, योग, दृष्टि, गुणस्थान।

(ख) सूक्ष्म-आत्मा, दंडक, गुणस्थान, लेश्या

(ग) असंज्ञी-योग, लेश्या, दंडक, गुणस्थान

(घ) तेजोलेश्याजीव का भेद, लेश्या, दंडक, गुणस्थान

(ङ) स्त्रीवेदीजीव का भेद, दंडक, योग, उपयोग

प्र. 10 जैन तत्त्व प्रवेशनिम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें 8

(क) लाडू घेवर.....न थाय अथवा नय किसे कहते हैं? से प्रारम्भ करते हुए प्रमाण द्वार अंत तक लिखें।

(ख) व्रताव्रत द्वार-चारित्र के अधिकारी निर्ग्रन्थ होते हैंसे प्रारम्भ करते हुए दोनों से पहले तक का लिखें। अथवा कृमि, शंख, कोड़ी, जोंक आदि की पृच्छा लिखें।

लघु-दण्डक व पांच-ज्ञान20

प्र. 11 लघु दण्डककिन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें 12

(क) समुद्घात द्वार

(ख) ज्योतिष देवों की स्थितितारा को छोड़कर इसकी स्थिति लिखें।

(ग) च्यवन द्वार

(घ) गति आगतितीन विकलेन्द्रिय से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

(ङ) प्राण द्वारसात नारकी से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

प्र. 12 पांच-ज्ञाननिम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें 8

(क) प्रतिबोधक दृष्टांत लिखें। अथवा सम्पूर्ण आकाश.....उद्घाटित करता है, को पूरा करें।

(ख) अनानुगमिक अवधिज्ञान अथवा वर्धमान अवधिज्ञान की व्याख्या करें।

संजया-नियंठा20

प्र. 13 संजयाकिन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें 12

(क) अनेक जीवों की अपेक्षा परिहार विशुद्धि चारित्र की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति किस प्रकार बनती है?

(ख) छेदोपस्थापनीय चारित्र का अंतर द्वार अनेक जीवों की अपेक्षा कितना व कैसे है?

(ग) उपसंपद्हान किसे कहते हैं? विस्तृत व्याख्या टिप्पण के आधार पर करें।

(घ) परिणाम किसे कहते हैं? यथाख्यात चारित्र का परिणाम द्वार लिखते हुए बताऐं कि उत्कृष्ट कोड़ पूर्व से कुछ कम की स्थिति किस प्रकार घटित होती है?

(ङ) संजया के आधार पर सामायिक चारित्र एवं उसके भेदों का वर्णन करें।

प्र. 14. नियंठाकिन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें 8

(क) स्थिति-द्वारअनेक जीवों की अपेक्षा पुलाक निर्ग्रंथ का जघन्य एक समय किन अपेक्षा से लिया गया है?

(ख) बकुश का काल द्वार तथा आकार्ष द्वार लिखें।

(ग) पुलाक की गति स्थिति व पदवी द्वार लिखते हुए बतायें कि पुलाक की गति किस अपेक्षा से कही गई है?

(घ) निर्ग्रंथ का आकार्ष द्वार लिखें तथा अनेक भव के क्रम में क्या अपेक्षा है? बताऐं।